बच्चों का कोना

अमरेन्द्र बेहरा*
अंजुला सागर**

वर्तमान युग में बड़ों की दुनिया के बोलबाले में बच्चों की दुनिया और बचपन कहीं खो से गए हैं। विद्यालय में बच्चों को विज्ञान और गणित की सूचनाओं तथा सूत्रों में ऐसे व्यस्त कर दिया जाता है कि उनकी स्वयं की कल्पना और सृजनात्मकता को अवसर ही नहीं मिलता सामने आने का।

इस संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबंध **''सभ्यता और प्रकृति''** से लिया गया निम्न उद्धरण हमें झिंझोड़ता हुआ-सा प्रतीत होता है–

''जब मैं बच्चा था तो छोटी–छोटी चीज़ों से अपने खिलौने बनाने और अपनी कल्पना में नए-नए खेल ईजाद करने की मुझे पूरी आज़ादी थी। मेरी खुशी में मेरे साथियों का पूरा हिस्सा होता था, बल्कि मेरे खेलों का पूरा मज़ा उनके साथ खेलने पर निर्भर करता था। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में व्यस्कों की बाजार-प्रधान दुनिया से एक प्रलोभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेज़ दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया गया, वह कमाल का खिलौना था- बड़ा और मानो सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमंड हो गया और अब उसका ध्यान हमारे खेलों में इतना नहीं लगता था, वह उस कीमती चीज़ को बहुत ध्यान से हमारी पहुँच से दूर रखता था, अपनी इस खास वस्तु पर इठलाता हुआ वह अपने अन्य साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाषा का प्रयोग कर सकता तो वह यही कहता कि वह उस हास्यास्पद रूप से श्रेष्ठ खिलौने का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था।

अपनी उत्तेजना में वह एक चीज़ भूल गया- वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था-कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज़ खो गई जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा। उस खिलौने से महज उसका धन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा

* *ऐसोसिएट प्रोफ़ेसर,* सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली 110 016
** *फ़ील्ड इनवैस्टीगेटर,* सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली 110 016

नहीं, न ही उसके खेल में बच्चे का आनंद था और न ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।'' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005, पृष्ठ संख्या xix)

इस उद्धरण में कवि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने हमें याद दिलाया है कि सृजनात्मकता और उदार आनंद बचपन की कुंजी है और नासमझ बड़ों के संसार द्वारा उनकी विकृति का खतरा है।

इन्हीं सरोकारों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005 में बच्चों को स्कूल और स्कूल से बाहर तमाम ऐसे अवसर प्रदान करने की बात कही गई है, जिसमें बच्चे न केवल स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण करें बल्कि अपनी कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता का भरपूर उपयोग कर सीखने का आनंद लें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 के इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पूरे देश के लिए ऐसी पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया जिनमें सूचनाओं का बोझ कम हो, बच्चों को समझ का आनंद मिले, इसके अवसर ज़्यादा हैं, बच्चे स्कूल के ज्ञान को, अपने स्कूल के बाहर की जिंदगी से जोड़ सकें, इसका भी प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 की इस सोच को भी स्कूली पाठ्यचर्या में लाने की कोशिश की गई है कि बच्चे पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर भी सीखें और ज्ञान का सृजन करें।

नई पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के पश्चात् एन.सी.ई.आर.टी. ने कई अन्य पहलकदमियाँ कीं जिनमें मुख्य थीं–

- बाल साहित्य का निर्माण
- बच्चों के लिए तरह-तरह के ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों का निर्माण
- बाल उत्सव

- स्कूलों में बच्चों के सीखने के लिए सक्षम वातावरण मुहैया कराने के संदर्भ में स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों का प्रशिक्षण इत्यादि।

इसी कड़ी में एक और पहलकदमी की गई, वह थी–एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली के परिसर स्थित सी.आई.ई.टी. (जिस भवन को चाचा नेहरू के नाम से जाना जाता है) में बच्चों के कोने की शुरुआत किया जाना। दिनांक 27 जनवरी, 2012 को 5–17 वर्ष के बच्चों को उनकी रुचि की पुस्तकें, रुचि के ऑडियो–वीडियो कार्यक्रमों, ऑरिगेमी, पपेट, कलात्मक गतिविधियों के अवसर देने के उद्देश्यों के साथ इस कोने का उद्घाटन एन.सी.ई.आर.टी. *निदेशक महोदया, प्रो. परवीन सिनक्लेयर* द्वारा किया गया जिसमें परिषद् के *सचिव, संयुक्त निदेशक,* सी.आई.टी. एवं परिषद् के संकाय सदस्य भी उपस्थित थे। कहने को यह कोना है परंतु इस कोने में बच्चों के संसार को समाहित करने की कोशिश की गई है।

यह कोना न केवल एन.सी.ई.आर.टी. के आस–पास के बच्चों के लिए वरन् दिल्ली व अन्य शहरों के बच्चों के लिए भी खुला है। सोमवार से शुक्रवार सायं 3 से 5 बजे तक यह बच्चों का कोना स्कूल के बाद बच्चों को आमंत्रित करता है, अपनी मनपसंद गतिविधियों के साथ समय बिताने के लिए। इन गतिविधियों में शामिल है–

- पुस्तक पठन
- मीडिया क्लब गतिविधियाँ
- चित्रकारी
- ऑरिगेमी

- पपेट बनाना व कहानी गढ़ना
- रचनात्मक एवं सृजनात्मक कला
- कंप्यूटर से पेंटिंग
- ग्राफ़िक्स
- कहानी सुनना व सुनाना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार बच्चों के विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित अनुभवों की आवश्यकता होती है–

- अन्वेषण
- प्रयोग
- प्रोत्साहन
- चुनौती

और इन अनुभवों को उपलब्ध कराने के लिए हमें बच्चों को देना होगा–

- अवसर
- मार्गदर्शन
- सहायता
- सुरक्षा एवं संरक्षा

'बच्चों का कोना' उपरोक्त दोनों बातों को ध्यान में रखता है और बच्चों को न केवल व्यक्तिगत तौर पर काम करने के अवसर देता है वरन् समूह कार्य के भी अवसर देता है। समूह कार्य करने से बच्चे एक-दूसरे के साथ सहयोग करना, एक-दूसरे की बात सुनना, सांझा करने जैसे गुण ग्रहण करते हैं।

सी.आई.ई.टी. में चल रहे बच्चों के इस कोने में 64 बच्चे सदस्य हो गए हैं। ये बच्चे नियमित रूप से आते हैं। अपनी मनपसंद गतिविधियों के साथ समय बिताते हैं। अपनी कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता एक-दूसरे के साथ सांझा करते हैं। तात्कालिक मुद्दों पर चित्र बनाकर (एक-दूसरे से बातचीत कर) बड़ों को भी एक सोच दे जाते हैं कि उन्हें किन चुनौतियों पर तात्कालिक तौर

पर काम करना होगा।

इसी तरह के कोने अगर समुदाय में जिला स्तर पर, खंड स्तर पर, गाँवों और शहरों में खोले जाएँ जिसमें शिक्षक, अभिभावक, समुदाय के सदस्यों का सहयोग प्राप्त हो तो हमारे देश के बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा को और निखारा जा सकता है तथा हमारा देश संसार को कई उम्दा कलाकार, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, शिक्षक, ग्राफ़िक डिज़ाइनर व मीडिया क्षेत्र से जुड़े कार्यकर्ता दे सकेगा।

इस तरह के क्रियाकलापों द्वारा बच्चे स्वयं की प्रतिभा, रुचियों, कौशलों (अपने अंदर छुपी प्रतिभा की पहचान कर) उन पर स्वयं भी काम कर सकेंगे और शिक्षकों को कुछ अलग करने के लिए प्रेरित करेंगे।